बेटी शैली के सुन्दर भविष्य के लिए

नरेश अग्रवाल

बेटी शैली के सुन्दर भविष्य के लिए

डॉ. नरेश अग्रवाल

सर्वाधिकार सुरक्षित – डॉ. नरेश अग्रवाल

इस 'ई–पुस्तक' का प्रकाशन डॉ. नरेश अग्रवाल द्वारा स्वयं किया गया है।
पुस्तक के रूप में प्रकाशन– प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, द्वारा कुछ वर्षों पहले किया जा चुका है।
ISBN 81-7714-351-4

ई–पुस्तक प्रकाशन वर्षः सन् 2014

प्रकाशन संस्थान
4715/21 दयानंद मार्ग, दरियागंज,
नई दिल्ली – 110002
फोनः 23253234, 65283371

डॉ. नरेश अग्रवाल-एक परिचय

''नरेश का मिजाज एक चिन्तक का है, वे जीवनानुभवों की गहराई में उतरने का माद्दा रखते हैं।'' – इंडिया टुडे

1 सितम्बर 1960 को जमशेदपुर में जन्म।

अब तक स्तरीय साहित्यिक कविताओं की 6 पुस्तकों का प्रकाशन तथा शिक्षा सम्बन्धित 6 पुस्तकों का प्रकाशन। साहित्य जगत में रचित पुस्तकों को अच्छी ख्याति प्राप्त। 'इंडिया टुडे' एवं 'आउटलुक' जैसी पत्रिकाओं में भी इनकी समीक्षाएँ एवं कविताएँ छपी हैं। देश की सर्वोच्च साहित्यिक पत्रिका 'आलोचना' में भी इनकी कविताओं को स्थान मिला। लगभग सारी स्तरीय साहित्यिक पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित।

'मरुधर' रंगीन द्विमासिक साहित्यिक पत्रिका का सम्पादन पिछले चार वर्षों से लगातार कर रहे हैं, जो आर्ट पेपर पर छपती है।

सन् 2014 में सूक्तियों पर 'सूक्ति–सागर' नाम से एक पुस्तक लिखी, जो भारतवर्ष में संभवतः यह पहला प्रयास होगा जब किसी लेखक द्वारा स्तरीय 1000 सूक्तियाँ हिन्दी भाषा में लिखी गयी।

'हिंदी सेवी सम्मान', 'समाज रत्न' सम्मान, अक्षर–कुंभ सम्मान आदि अनेक सम्मानों से सम्मानित।

पौधों की बोनसाई विद्या में पूर्ण रुप से पारंगत तथा हजारों र्दुलभ पौधे इनके संग्रह में शामिल। बोनसाई में अनेक पुरस्कार मिले।

शतरंज, ज्योतिष, हस्त रेखा एवं होम्योपैथी में कई साल तक विस्तृत अध्ययन।

लगभग 5000 पुस्तकें इनके निजी पुस्तकालय में संग्रहीत हैं।

फोटोग्राफी विद्या में पूर्ण रुप से दक्ष तथा अपने भ्रमण के दौरान हजारों तस्वीर का संग्रह इनके बेवसाईट पर उपलब्ध हैं। यात्रा के बेहद शौकीन तथा अनगिनत जगहों की यात्रा की।

सम्पर्क–

रेखी मेन्शन, 8 डायगनल रोड, बिष्टुपुर, जमशेदपुर–831001

दूरभाष – 9334825981, 7488504892

ई. मेल – smcjsr77@gmail.com

बेवसाईट : www.nareshagarwala.com

भूमिका

'बेटी शैली से वार्तालाप' एक नये ढंग की कृति है। इसमें संगृहीत रचनाओं में बोधकथा तथा गद्यात्मक काव्य दोनों का रसात्मक समन्वय देखा जा सकता है। यह वार्तालाप कोई सामान्य बातचीत नहीं है। इसकी पृष्ठभूमि में लेखक के द्वारा संचित वह अनुभव–संपदा है, जो, जो सूक्ष्म पर्यवेक्षण से ही किसी को प्राप्त हो पाती है। श्री नरेश अग्रवाल को वह दृष्टि प्राप्त है, जिस पैनी दृष्टि से कोई अपने चतुर्दिक का पर्यवेक्षण कर पाता है। यह स्मरणीय है कि नरेशजी मूलतः एक व्यवसायी हैं और जो व्यवसायी होता है, वह एक सफल पर्यवेक्षक और मनोविज्ञ भी होता है। परंतु, प्रत्येक व्यवसायी को मृग की तरह ही अपनी नाभी की इस कस्तूरी का पता नहीं रहता। नरेश जी अन्य व्यवसायियों से इसी अर्थ में पृथक हैं, क्योंकि इन्हें अपनी भीतर छिपी इस 'कस्तूरी' का ज्ञान है। इसीलिए तो वह कस्तूरी की इस सुगंध से सबको सुवासित करने के लिए सक्रिय भी हैं।

'बेटी शैली से वार्तालाप' एक विशिष्ट कृति है। यह बातचीत शैली को संबोधित है, लेकिन यह केवल उसके लिए ही नहीं है। यह प्रत्येक शैली और शैल के लिए है–वह चाहे भारत में रहता हो या संसार के किसी अन्य देश में। इसे अतिशयोक्ति न माना जाय, तो मैं यह भी कहना चाहूँगा कि यह वार्तालाप वैसे प्रत्येक व्यक्ति के लिए है, जो सफल, सार्थक और प्रगामी जीवन का आकांक्षी है।

श्रवण कुमार गोस्वामी
सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति,
गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली–1

शेर को देखकर

शेर को देखकर जब सारे जानवर भागने लगते हैं तो उसे अपनी ताकत का अंदाजा हो जाता है कि वो एक शूरवीर है। लेकिन यह कैसा जंगल का राजा कि कोई भी स्वयं आकर उसका ग्रास नहीं बनता बल्कि उसे ही शिकार को थका कर पकड़ना और दबोचना होता है। इसलिए अगर तुम्हारे पास जो ज्ञान है वह समृद्ध और ताकतवर होने पर भी जब तक लोगों के बीच सक्रिय नहीं होता तब तक उसकी महिमा को कोई स्वीकार नहीं करता है। इस ज्ञान को सक्रिय करना यानि कि उसे अच्छे कामों में लगाना ही उसे सक्रिय करने जैसा है।

❖❖❖

नई पुस्तक को पढ़ना

अचानक जब तुम सड़क पर बहुत सारे लोगों को नई वेशभूषा में देखती हो, तुम्हें लगता होगा जरूर वे किसी उत्सव में जा रहे होंगे और जहाँ उत्सव होगा, वहाँ हजारों लोग एक साथ होंगे। जैसे बहुत सारे शब्द एक पुस्तक में। ये सभी शब्द वाक्यों की कतार में नृत्य करते हुए बदल-बदल कर अपनी बातें कहते हैं। इन सारे शब्दों को तुम जानती हो, लेकिन बार-बार वे अलग-अलग तरह की बात बोलते हैं जैसे नृत्य में हमारे अंग अलग-अलग मुद्राएँ प्रस्तुत करते हैं। एक नई पुस्तक को पढ़ना सचमुच एक उत्सव में शामिल होने जैसा सुख देता है।

❖❖❖

एक स्वस्थ पेड़ में

मैं एक स्वस्थ पेड़ में एक स्वस्थ मनुष्य की तरह ही समानता देखता हूँ। क्योंकि उसमें भी सुगन्ध, ओज, इन्द्रियों रूपी डालियों में हरियाली के प्रति सजगता एवं फल और फूल देने की शक्ति तथा अपनी छाया में एक अच्छे मनुष्य की आँखों की तरह ही विश्राम दिखलाई देता है।

❖❖❖

श्रेष्ठ आधार

एक पेड़ में अगर फूल केवल कुछ ही जगहों पर न होकर चारों तरफ फैले होते हैं, तो उसकी खूबसूरती बढ़ जाती है। उसी तरह अगर कक्षा में पढ़ने वाले बच्चे बहुत से हों तो उन्हें देखकर एक शिक्षक का मन खुश होता रहता है। उन्हें लगता है कक्षा का स्तर बढ़ा हुआ है, इन्हें और अधिक ऊँची बातें बतायी जा सकती है। क्योंकि हीरा हमेशा सोने जैसी बहुमूल्य धातुओं पर ही जड़ा जाता है लोहे पर नहीं। हमेशा श्रेष्ठ चीजें, श्रेष्ठ आधार पर ही शोभा पाती हैं, इसलिए तुम हमेशा कक्षा में एक श्रेष्ठ आधार बनने की कोशिश करो।

❖❖❖

एक अच्छी शैली में

यह कितने आश्चर्य की बात है कि तुम्हारी कितनी ही सहेलियाँ हैं और हमेशा तुम सब एक–दूसरे के मन को पढ़ती या समझती रहती हो, लेकिन तुम लोगों ने कभी एक–दूसरे के लिखने की शैली ठीक से पढ़ने या समझने की कोशिश नहीं की होगी। केवल अपने ही उत्तर देने के तरीके में उलझी रही होगी। जबकि तुम बहुत से लोगों के उत्तर देने के तरीकों को पढ़कर उनमें जो भिन्नताएँ हैं उसे समझ सकती हो और अपने लिखने में जो कमी है उसे दूर कर सकती हो। एक अच्छी शैली में लय होती है और तथ्यों को क्रम दर क्रम स्पष्ट भाषा में लिखा जाता है। जब उत्तर मौलिक रूप से अच्छी शैली में लिखे जाते हैं तो वे एक तरह का नया सृजन करते हैं जो परीक्षक को अधिक अंक देने के लिए प्रेरित करते हैं।

❖❖❖

महापुरुषों के लिखे वाक्य

कई जगहों पर महापुरुषों के लिखे वाक्य या सूक्तियाँ होती है जिन्हें तुम बिना वाद-विवाद के सही और अनुसरण योग्य मान लेती हो। लेकिन तुमने कभी सोचा है कि ये सूक्तियाँ एक लम्बा, कठिन और अनुभवी जीवन जीने के बाद ही हृदय से निकलती है। इनके हर शब्दों में जीवन से जूझने, उसे समझने तथा बिल्कुल पास से देखने की छाप होती है। तुम जैसे ही इन्हें पढ़ती हो ये अचानक निकली धूप की तरह तुम्हारे मन को प्रकाशित कर देती हैं।

वाक्य एक ऊर्जा है

प्रत्येक सुन्दर वाक्य एक ऊर्जा है जो तुम्हारे मन को चकाचौंध, शक्ति एवम् दूर दृष्टि प्रदान करते हैं। तुमने उन्हें निहारा और पढ़ा कि नहीं, वे अपने व्यक्तित्व को तुम पर उतारना शुरू कर देते हैं, लेकिन इनके व्यक्तित्व को तुम्हें लेना नहीं है, सिर्फ समझना और महसूस करना है, ताकि तुम अपने मौजूदा व्यक्तित्व में और बहुत सारी विशेषताओं का निर्माण कर सको।

❖❖❖

पेड़ की कद्र

केवल तुम्हारा डाक्टर बन जाना या आदरपूर्वक डाक्टर कहलाना ही पर्याप्त नहीं होता, जब तक कि बहुत सारे मरीजों को तुम ठीक करके अपने आपको एक सफल चिकित्सक सिद्ध नहीं कर देतीं। एक पद के मिलने पर साथ–साथ एक दायित्व का बोझ भी सर पर आ जाता है, जिसका निर्वाह पूरी जिन्दगी भर करना होता है। एक छोटे से पेड़ की कद्र उस समय ही होती है जब उससे लोगों को छाया, फल–फूल एवम् बीज मिलने लगे वरन् उसकी गिनती भी दीवारों में लगे पेड़ की तरह ही होगी जो अपने आधार को ही क्षत–विक्षत कर घरों को कमजोर करते रहते हैं।

❖❖❖

ज्यमितीय और रंगों संबंधित ज्ञान

कई बार तुम्हें लगता होगा कि एक पाठ को तुम पूरे मन से पढ़ रही हो फिर भी कोई चोर उस पढ़ाई का थोड़ा या अधिक अंश चुरा लेता है। यानि पाठ खत्म होते–होते वे चीजें दिमाग से गायब हो जाती है। ये गायब होने वाली चीजें पाठ के पात्र, घटनाएँ या चीजों के बारीक विवरण होते हैं, इन्हें कैद करने के लिए हमें अपने सामान्य ज्ञान यानि जो पाठ में तो नहीं है, लेकिन दुनिया उन्हीं के ज्ञान के सहारे चलती है को समृद्ध करना होगा ताकि हमारी भौगोलिक, ऐतिहासिक, गणितीय, विज्ञान, रसायन एवं मनुष्यों संबंधी समझ में परिपक्वता आये। जैसे किसी की वेशभूषा के किसी एक अंश को भी हम याद रख लेते हैं तो व्यक्ति एवम् उससे जुड़ी बहुत सारी बातें हमारे दिमाग में रह जाती है। जितना हमारा ज्यामितीय और रंगों संबंधित ज्ञान अच्छा होगा, चीजों को हम अपने में अच्छी तरह बाँध पायेंगे।

❖❖❖

कमजोर वृक्ष की तरह

जब एक पेड़ को पानी कम मिलता है तो उसके बहुत सारे पत्ते सूखकर गिरने लगते हैं और पेड़ सीमित पत्तों के सहारे ही कम मात्रा में प्राप्त पानी का उपभोग कर अपने को बचाये रखता है। ऐसा तरीका तुम्हें भी अपनाना पड़ता है जब तुम पढ़ाई पर विशेष ध्यान नहीं देती और अचानक परीक्षा के समय दबाव बढ़ने पर केवल महत्वपूर्ण विषयों की ओर ध्यान देती हो, इससे दूसरे कम महत्वपूर्ण लगने वाले विषय कमजोर पड़ जाते हैं। लेकिन ज्ञान के दृष्टिकोण से तो सभी विषय महत्वपूर्ण हैं, कौन जानता है आने वाले कल में ये विषय ही अधिक महत्वपूर्ण हो जाए। इसलिए शुरू से ही सभी विषयों पर पूरा ध्यान और समय देना जरूरी है ताकि तुम्हारी रचना एक भरे-पूरे वृक्ष की तरह हो न कि झड़े हुए पत्ते वाले कमजोर वृक्ष की तरह।

❖❖❖

गूढ़ बातें छुपी हुई थी

कहते हैं गुलाब के पेड़ में पहले काँटे आते हैं और वो काँटों से भरा हुआ बिल्कुल भद्दा लगता है, लेकिन जल्दी ही वह अपने में फूल खिलाकर सबका ध्यान आकर्षित कर लेता है। तुम्हारी पढ़ाई के भी बहुत सारे पाठ ऐसे होते हैं जो तुमसे बिल्कुल ही जुड़ न पाते यानि तुम्हें बिल्कुल पसंद नहीं आते लेकिन इंतजार करना बुरी बात नहीं है, वे पाठ ही एक दिन तुम्हारे सबसे अधिक रूचिकर हो जाते हैं, जब उन्हें तुम थोड़ा बहुत समझने लगती हो और महसूस करती हो कि इनमें कितनी गूढ़ बातें छुपी हुई थी।

❖❖❖

सामान्य सा जीवन

तुम्हें इस बात पर शत–प्रतिशत यकीन करना होगा कि कठिन एवम् दुर्गम चीजों को ही हल करने के बाद कोई सफल व्यक्ति कहलाता है। साधारण चीजों को हल करने वाला व्यक्ति हमेशा साधारण ही रह जाता है। लेकिन ये कठिन और दुर्गम रास्ते एक या दो दिन में पार नहीं किये जाते हैं, इन्हें पार करने में वर्षो की साधना करनी होती है, कठिनाईयों और मेहनत की एक बहुत लम्बी श्रृंखला से गुजरना होता है। जो लोग रूके हुए हैं वे तालाब की तरह हैं कभी सूख गए तो कभी भर गए। कुछ भी उनके हाथों में नहीं, सिवा एक सामान्य सा जीवन जीने के।

❖❖❖

मानसिक द्वंद हटाने के लिए

शरीर की पीड़ा को तुम जानती हो इसलिए उस जगह मरहम पट्टी कर उसका उपचार कर लेती हो, लेकिन जब मन में पीड़ा पहुँचती है तुम उस स्थान को नहीं जानती, इसलिए उसका उपचार नहीं कर पाती। ये ही मानसिक जख्म बीच–बीच में पुरानी घटनाओं की याद दिलाकर तुम्हारे मन में टीस पहुँचाते रहते हैं। इन कारणों से अक्सर तुम अपना ध्यान पढ़ाई में केंद्रित नहीं कर पाती। जब तक मन को अलग–अलग क्रियाओं में बाँटने वाली इन बीमारी का निवारण नहीं हो जाता, पढ़ाई में अपने आप को पूरी तरह समर्पित करना संभव नहीं होता। अच्छा तो यह होगा कि ऐसे झगड़ों में पड़ा ही नहीं जाए और अगर ऐसी घटना हो भी जाए तो जिन कारणों से परेशानी हो रही है उनसे समझौता कर लिया जाए। अपनी पढ़ाई को ही महत्वपूर्ण समझते हुए, मानसिक द्वंद हटाने के लिए कुछ चीजों का त्याग करना पड़े तो भी वो उचित और शांतिदायक होगा। ❖❖❖

तुम्हारी सजगता दर्शाता है

अक्सर घरों के सामने वैसे पेड़ लगाये जाते हैं, जिनके पत्ते जाड़े में झड़ जाते हैं और धूप आने लगती है। फिर गर्मियों में उसी वृक्ष में पत्ते लौट आते हैं और चारों तरफ छाया हो जाती है। समय के अनुसार ही पहने कपड़े अच्छे लगते हैं और मौसम के अनुसार खान–पान भी। समय के साथ ही हमारे गीत, हमारी भाषा, हमारे नारे एवँ नृत्य करने के तरीकों में बदलाव आता है। तुम में भी समय बीतने के साथ बदलाव आते हैं, उनकी तरफ भी निगरानी रखना, जीवन के प्रति तुम्हारी सजगता दर्शाता है।

❖❖❖

सैनिक जीवन अधूरा ही रहा

जब भी तुम्हें चोट लगती होगी, शुरू में काफी दर्द होता होगा, लेकिन धीरे–धीरे दर्द सहने की आदत हो जाती है और फिर उतना दर्द महसूस नहीं होता। कई बार ढेर सारे विषय और पढ़ाई देखकर तुम्हारे मन में घबड़ाहट होती होगी जैसे इनकी और आगे बढ़ते ही तुम जख्मी हो जाओगी, लेकिन धीरे–धीरे मन को कठोर बनाकर इनसे जूझने की ताकत आ जाती है। कहते हैं जब तक एक सैनिक के शरीर में लड़ाई के जख्म नहीं रहे उसका सैनिक जीवन अधूरा ही रहा। जिस मार्ग का अनुशरण करने का फैसला तुमने किया है, उसमें हमेशा कठिनाईयाँ, भय आदि पहले आते हैं और खुशियाँ धीरे–धीरे और बाद में। इसलिए इन सारे अनुभवों को कड़ी दवा की तरह पीते जाना चाहिए क्योंकि तुम्हारा मार्ग आगे बढ़ने के लिए है न कि केवल मुश्किलों को देखते रहने के लिए।

❖❖❖

नयी चीज को देखकर

जिन राजाओं के पास लड़ाई के लिए बड़ी सेना होती है उनके भय से ही छोटे-छोटे राज्य उनके अधीन हो जाते हैं। इस तरह से उनकी ताकत और सैनिक बल में वृद्धि होती रहती है। तुम्हारा ज्ञान भी जितना समृद्ध होगा वह नजर में आने वाले प्रत्येक ज्ञान को अपने कब्जे में करता जाएगा। इस तरह से तुम्हारे ज्ञान और कौशल में निरन्तर वृद्धि होती रहेगी फिर तुम किसी भी नयी चीज को देखकर नहीं घबराओगी।

❖❖❖

जबर्दस्त इच्छा

जिन्हें छाया चाहिए उन्हें पेड़ मिल जाते हैं, जिन्हें गर्मी चाहिए उन्हें ऊन के कपड़े, जिन्हें जीभ की मिठास चाहिए उन्हें मीठे फल और जब तुम में सचमुच में ज्ञान पाने की जबर्दस्त इच्छा होती है तो अच्छी–अच्छी किताबें और अच्छे शिक्षक, किन्हीं न किन्हीं माध्यम से मिल ही जाते हैं।

पुस्तकों की ललक

जब तुम में पुस्तकों की ललक होती है तुम पुस्तकालयों की तरफ भागती हो, विश्राम के समय भी शिक्षकों से जाकर अपने प्रश्नों का हल पूछती हो और पढ़ते–पढ़ते अपना भोजन करना भी भूल जाती हो। ऐसे प्रेम में पड़कर फिर वापस बाहर लौटना लगभग असंभव है।

❖❖❖

अपनी जानकारी को

इस दुनिया में अधिकतर लोग एक निर्देशित पढ़ाई में ही लगे रहते हैं, वे दूसरी तरफ बहुत कम ध्यान देते हैं। यह जीविकापर्जन के लिए हासिल किया जा रहा ज्ञान एक तरह का सीमित ज्ञान ही होता है, जबकि जिनमें वृहद ज्ञान की लालसा होती है वे अपने पैरों को इस तरह से नहीं बाँधते तथा एक खुले पक्षी की तरह सारी दुनिया देखते हैं। तुम्हें भी विभिन्न तरह की चीजों एवम् उनके कार्यकलापों में रुचि रखनी चाहिए तथा अपनी जानकारी को संचार माध्यमों एवं यात्राओं से बढ़ाते रहना चाहिए। अच्छे लोगों से वाद–विवाद एवं विचारों का आदान–प्रदान करना भी ज्ञान में वृद्धि का एक तरीका है।

❖❖❖

इससे भी अच्छा संबंध

कमरे में फूलों का गुलदस्ता रख दिया जाता है तो कमरा जीवंत हो उठता है, खिड़की के बाहर हरियाली हो तो ठंडी हवा भी जैसे हरापन लिए हुए हमारे पास आती हुई लगती है। सुन्दर–सुन्दर पर्वतों को देखने का भी एक सुख है और छोटी–सी झील में अनगिनत चीजें के समाहित बिम्बों को देखने का भी एक अलग सुख है। एक अच्छी पुस्तक पढ़ते हुए भी हमें इस तरह की भावनात्मक अनुभूतियाँ होती है। हर बार लगता है, तुमसे ही कोई तुम्हारे मन की बात बोल रहा है। कोई अपने अनुभव बाँट रहा है और अद्‌भूत होता है यह प्रेम कि तुम भूल जाती हो कि दुनिया में इससे भी अच्छा संबंध हमारा किसी चीज से हो सकता है।

❖❖❖

गाने के साज की ओर

तुम पाओगी की प्रत्येक व्यक्ति में एक तरह की बैचेनी होती है। चाहे वह पैसे कमाने की हो, यात्रा पर जाने की हो, सुन्दर चीजें खरीदने की हो, घर बनाने या सजाने की हो, प्रेम पाने या देने की हो, पढ़ने की हो या पढ़ा हुआ दूसरों के बताने की हो, पौधे लगाने, चित्र बनाने, कलाकार बनने, डॉक्टर बनने, ताकत हासिल करने की आदि–आदि। अनगिनत उदाहरण हो सकते हैं इसके। इन्हीं में से एक या कुछ बेचैनी को लिए हुए मनुष्य जीता है और तुम्हारी यह बेचैनी जिस दिशा में जितनी प्रबल होगी, आदमी उसी दिशा में अधिक काम करेगा। इस बेचैनी की अधिकता ही तुम्हें पढ़ने–लिखने में अधिक सक्रिय बनाती और तुम इनके प्रति महत्वकांक्षी हो जाती हो। यह बेचैनी जैसे ही कम हुई, तुम्हारी इच्छा शक्ति भी कम हो जाती है। तुम देखोगी की एक अच्छा चित्रकार हमेशा कुछ न कुछ बनाने के लिए परेशान रहता है और एक अच्छा गायक हमेशा गाने के साज की ओर दौड़ता है जबकि पढ़ने वाले बच्चों की अंगुलियाँ पन्ने ही पन्ने पलटती रहती है। ❖❖❖

नगण्य दूरी

चील काफी ऊँचाई पर उड़ती है लेकिन अभी भी उसके ऊपर एक काफी ऊँचा आकाश होता है छूने के लिए। इसलिए जब भी हम सोचते हैं कि हमने काफी कुछ कर लिया, काफी सारी सफलता प्राप्त कर ली तब भी हमारे पास प्राप्त करने हेतु इतना कुछ होता है कि जो हमने प्राप्त किया है वह नगण्य ही कहलाता है। जब हम में यह बोध होता है कि हम ने तो अभी नगण्य दूरी ही तय की है तो मन में अहम् भावना का विनाश होता है और हम सरल होते जाते हैं और एक सरल व्यक्ति ही सबसे अधिक व्यावहारिक और मिलनसार होता है। वो सामाजिक होता है, सबसे प्यार करता है और अपने ज्ञान और प्रसिद्धी का बोझ खुद संभाल कर दूसरों पर हावी नहीं होता। ऐसे सरलतम् बोध ही हमारे जीवन को महान बनाते हैं।

❖❖❖

पुस्तकों के सामने

पुस्तकों के सामने झूठ, कपट, बेईमानी, लापरवाही, घमंड, ध्यानाभाव, आलस्य, शीघ्रता आदि दोषों से ग्रसित व्यक्ति बिल्कुल अलग–थलग हो जाता है। वो पुस्तकों की ऊँचाई तक नहीं पहुँच पाता। आश्चर्य होता होगा तुम्हें यह सोचकर की इतनी सारी बाधाओं को तोड़कर कितने संयम के साथ एक पुस्तक के निकट आ पाती हो और फिर एक अच्छे ज्ञान का विश्राम तुम्हें मिलता है। पुस्तकें ही वो जगह हैं जहाँ कोई निर्देश या कानून नहीं लिखा हुआ है लेकिन तुम अपने आप नत्मस्तक होकर उसकी सत्ता को स्वीकार कर लेती हो।

❖❖❖

नाटक की तरह

किसी शिक्षक के तेवर गर्म होते हैं और उनके पढ़ाने का तरीका आक्रामक होता है यानि जोर–शोर से अपने बातों पर दृढ़ता दिखलाते हुए, जैसे वे तुम्हें एक नई दिशा में अपने तरीके से ले जा रहे हों। कुछ शिक्षक नम्र तथा धीरे–धीरे पाठ को समझाने वाले एवम् कुछ शिक्षक थोड़े निढाल जैसे, बस पढ़ाने भर का काम पूरा करना हो उन्हें जैसे। इसी तरह से छात्र भी होते हैं कई बहुत अधिक उत्सुक एवम् जिज्ञासु, कई बस नाम के लिए हाजिर, कई कुछ समझने की कोशिश में जूझते हुए तो कई कक्षा खत्म होने का इंतजार करते हुए। इन सारी चीजों को गौर से देखोगी तो एक नाटक की तरह लगेगी तुम्हें यह कक्षा और सारे पात्र अलग–अलग तरह से इस नाटक को जीवंत करने का भरसक प्रयत्न करते हुए।

❖❖❖

देश के लिए

हर पाठ का एक मूड होता है जैसे वाणिज्य की पढ़ाई में व्यापारी मूड, गणित की पढ़ाई में जोड़-तोड़ का, भौतिकी की पढ़ाई में वैज्ञानिक, रसायन की पढ़ाई में प्रयोगशाला का, इतिहास की पढ़ाई में प्राचीन, भूगोल में जलवायु आदि-आदि। जब शिक्षक इस मूड को पूरी कक्षा में फैलाने में सक्षम होता है यानि पढ़ाई के विषय के अनुसार ही सभी उस मूड में खो जाएँ तो उनका उद्देश्य पूरा हो जाता। जैसे कक्षा में अगर देश भक्ति की बात बतायी जाए तो छात्राओं में देश के लिए कुछ करने का जोश पैदा हो जाए।

❖❖❖

सरल और कठिन कार्य

एक माली जब गड्ढा खोदने के काम से थक जाता है तो पानी देने लगता है और पानी देने के काम से ऊब जाता है तो फूल तोड़कर माला बनाने जैसा सरल काम अपने हाथों में ले लेता है। इसी तरह से सरल और कठिन कार्य हमारी दिनचर्या में शामिल होते हैं। एक से थके या ऊबे दूसरे को थाम लिया, दूसरे से थके या ऊबे तीसरे को थाम लिया। इस तरह के सामंजस्य से पढ़ाई का काम भी चलता रहता है। तुम्हें भी अपनी रुचि के बदलाव के अनुसार अलग-अलग पुस्तकों को पढ़ना अधिक लाभ और उत्साह देगा।

❖❖❖

व्यक्तित्व एवं उपयोग

नये–नये कपड़े पहनने के बाद उसी तरह के पहनावे वाले लोगों के साथ बैठना शोभा देता है। सामान्य कपड़े पहनकर सामान्य काम करने वालों के साथ या उसी तरह के पहनावे वाले लोगों के पास जाना अच्छा लगता है। विद्वान लोगों से विद्वतापूर्ण बातें करने पर उनके समय का सदुपयोग होता है एवम् उनसे मूर्खतापूर्ण प्रश्न पूछने पर उनके समय का दुरुपयोग। उसी तरह फल, उपहार या किताबें किसी जगह पर भी ले जाएँ या किसी को भी उपहार में दे सभी खुशीवश उनकी ओर देखते हैं। जबकि तलवारें और बंदूक कहीं भी रखी हों, लोग उन्हें देखकर चौंक जाते हैं। इस तरह से संसार में सभी चीजों का अपना व्यक्तित्व एवम् उपयोग है, जब उन्हें तुम समझोगी तो तुम में चीजों को सही तरीके से इस्तेमाल करने की तत्परता आयेगी।

❖❖❖

जिनकी ताकत कैद हैं

जिनमें ताकत होती है वे ही हौसले से गुर्राते या गर्जीला शोर मचाते हैं जैसे शेर और सागर। जिनकी ताकत कैद हैं वे चुपचाप तालाब की तरह ही पड़े रहते हैं। तुम में जब भी हौसला होता है, समझो तुम्हारा ज्ञान पीछे से जरूर तुम्हें ताकत दे रहा है और जब तुम आलस में होती हो तुम्हारा ज्ञान सो रहा होता है।

❖❖❖

इन सबका विसर्जन

साँप और बिच्छू को घर में देखते ही मार दिया जाता है, जबकि बिल्लियों को सिर्फ खदेड़ा जाता है। जो स्वभाव से ही हानिकारक हैं उन पर एक पल भी भरोसा नहीं किया जा सकता है क्योंकि ये मौका पाते ही हमारा अंत करने या नुकसान पहुँचाने की चेष्टा करेंगे। उसी तरह निद्रा, आलस्य, मन की अस्थिरता, क्रोध, ईर्ष्या आदि पढ़ाई के बहुत बड़े दुश्मन हैं और इनके रहते हुए एक पन्ना भी साधा नहीं जा सकता। इसलिए पढ़ाई की शुरूआत के पहले ही इन सबका विसर्जन जरूरी है ताकि तुम पढ़ाई में पूरी तरह से रम सको। कभी कभार किसी अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य की पुकार को सुना जा सकता है।

❖❖❖

तुम जितनी सर्तक होती हो

पढ़ाई के दौरान शिक्षक के स्वर कानों के पास आते हैं और कुछ कह कर चले जाते हैं। अगर तुमने समझ लिया तो ठीक है वरन् बाद में दूसरे विकल्पों का सहारा लेना होता है। लेकिन आश्चर्य की बात है कि तुम्हारे पास दो कान हैं, एक से बात छूटी तो कोई बात नहीं, लेकिन दूसरे कान से भी वो बात कैसे छूट गयी। सच कहा जाए तो परीक्षा के समय तुम जितनी सर्तक होती हो, यहाँ तक की दो–दो कलम रखती हो, वैसी ही सतर्कता की माँग कक्षा में पढ़ा रहे शिक्षक तुमसे करते हैं, तभी जाकर उनके ध्येय में सफलता मिलती है।

❖❖❖

आँखें खुलने लगती है

जिन पहाड़ों में औषधीय गुणों से युक्त पौधे छिपे होते हैं उनका महत्व बढ़ जाता है और उस तालाब का भी जिसमें मछली का उत्पादन अधिकतम होता है। जब चीजों के गुण सामने आने लगते हैं, हमारी आँखें खुलने लगती है और जो पुस्तकें हमें कभी भी प्रिय नहीं थी, अगर उनसे थोड़ा सा भी लाभ मिलने पर उन्हें बार–बार पढ़ने का मन करता है। जो आँवले जैसे फल की गुणवत्ता को जानते हैं वे उसे सुखाकर भी वर्षो–वर्षो तक इस्तेमाल करते रहते हैं जबकि इसके बारे में न जानने वाले लोग इस अमृत तुल्य फल को तीता कहकर फैंक देते हैं।

❖❖❖

ज्ञानार्जन करते-करते

धीरे-धीरे ज्ञानार्जन करते-करते हम बँध जाते हैं ज्ञान की असंख्य तहों से, लेकिन इसके गुलाम कभी भी नहीं। यह हमारे हाथ और पाँव की तरह, हमारे सारे क्रिया-कलापों में शामिल होता है और हमारा रक्षक भी होता है मुसीबतों से लड़ने के लिए और उलझे हुए कामों को सुलझाने के लिए।

महत्वपूर्ण को पहचानो

एक पाठ पढ़ते समय तुम देखोगी कि उस पाठ में कुछ महत्वपूर्ण चीजें छुपी हैं, उन चीजों के बारे में बताना उस पाठ का मकसद था और उन महत्वपूर्ण बातों से ही परीक्षा के लिए प्रश्न बनते हैं। अतः उस महत्वपूर्ण को पहचानो फिर प्रश्न अपने आप तुम्हारे दिमाग में उपजने लगेंगे।

❖❖❖

महत्वपूर्ण बातें लिखकर

कई बार मजबूरी और अभाव में लोग लालटेन को थोड़ी देर के लिए जलाकर खाना बनाने जैसा महत्वपूर्ण कार्य करते हैं फिर उसे बुझा देते हैं यानि केवल बेहद जरूरी कार्यों में ही उसकी रोशनी का प्रयोग करते हैं, ताकि उसका ईंधन बचा रहे। जब परीक्षा देते समय अगर तुम्हारे पास समय का अभाव हो और कई प्रश्नों के उत्तर देने हो, उस समय केवल महत्वपूर्ण बातें लिखकर ही उत्तर को संक्षिप्त किया जा सकता है और बाकी कम महत्व वाली बातों को छोड़ा जा सकता है।

❖❖❖

जीवन का एक सत्य

नावें चल रही है, फसले बढ़ रही हैं, पौधों में फल–फूल आ रहे हैं, कुएँ पानी दे रहे हैं और बच्चे अपना नटखटपन छोड़ने की कोशिश में है। यानि सभी एक सफल रास्ते की ओर अपना मकसद पूरा करने हेतु बढ़ रहे हैं। लेकिन कभी किसी का काम खत्म नहीं होता। एक काम पूरा होते ही दूसरा काम हाथ थाम लेता है और काम करते–करते एक दिन पूरी जिन्दगी कट जाती है। यही जीवन का एक सत्य है।

❖❖❖

पीछे छूट जाने का भय

जब बगीचे के एक पेड़ में कीड़े लग जाते हैं तो सारे वृक्षों में दवा छिड़की जाती है। जब एक बच्चे को चेचक हो जाता है तो सारे बच्चों को टीका लेने के लिए अगाह किया जाता है। इसलिए एक चोरी, एक दुर्घटना, एक बीमारी, एक असामायिक मौत आदि जैसी घटनाएँ सबके सामने उदाहरण बन कर आती है। तुम्हारी कक्षा में एक बच्चा फेल होता है, उसका साथ सभी बच्चों के साथ छूट जाता है। कितना बुरा लगता होगा कि सभी लोग आगे बढ़ रहे हैं और वो पीछे छूट रहा है। उसे पीछे छूट जाने का भय भी सभी में समा जाता है।

❖❖❖

आसान तरीका अपनाकर

सभी चीजों को क्रम दर क्रम संचालित कर कड़ी मेहनत के द्वारा पूर्ण किया जाता है। बगीचे में फूल के पेड़ लगाने के पहले जमीन को खोद, खोदकर तैयार करना पड़ता है फिर उसमें खाद डालना, बीज छिड़कना और धीरे–धीरे दवाओं के छिड़काव से एक दिन हमें फूल प्राप्त होते हैं। हमारे पास कोई ऐसी सीधी विधि नहीं है बस बीज छिड़को और फूल पा जाओ। कई अच्छे कामों की श्रृंखला को कर चुकने के बाद ही कोई कार्य सम्पादित होता है। इसलिए तुम्हें अपने कार्य करने के तरीकों को जाँचते रहना चाहिए की क्रम दर क्रम तुम्हारे कार्यों का सम्पादन हो रहा है कि नहीं? या तुम जल्दीबाजी में कोई आसान तरीका अपनाकर अपने मूल उद्देश्य से भटक तो नहीं रही हो?

❖❖❖

आयी खराबी की जॉच

जब एक मशीन अच्छी तरह से सामानों का निर्माण नहीं कर रही होती है तो उसमें आयी खराबी की जाँच चारों ओर से की जाती है, ताकि उसकी गुणवत्ता पहले की तरह ही कायम हो सके। अगर तुम्हारे परीक्षाफल में गिरावट आ रही है, या तुम्हारा रुझान पढ़ने में पहले जैसा नहीं रहा या अपनी पूरी कोशिशों के बावजूद भी ठीक से नहीं पढ़ पा रही हो तो यह चिंता का विषय होगा। तुम्हें अपने भीतर झाँककर देखना होगा कि आखिर यह कमी आयी क्यों? कई अनुभवी लोगों से भी तुम इस विषय में राय ले सकती हो। अगर तुममें सचमुच में शिक्षा के प्रति समर्पण का भाव होगा, विद्यार्जन की भूख होगी, एकाएक तुम फिर से ठीक हो जाओगी। बिल्कुल पहले की तरह।

❖❖❖

अपनी जड़ों को पहचानो

जो वृक्ष हष्ट-पुष्ट नहीं होते हमेशा किसी न किसी बीमारी के शिकार होते हैं, फिर उनसे फल की उम्मीद रखना भी बेकार है। ऐसे वृक्षों की जड़ें अवश्य ही कमजोर होती है। उनके चारों ओर सड़ता हुआ पानी भरा रहता होगा या चूहों के बिल या कीड़ों की भरमार होगी। इस तरह के कई कारणों से वे अपने मूल स्थान से ही कमजोर होने के कारण सही रूप से कभी भी पनप नहीं पाते। अतः यह हमेशा जरूरी है कि तुम अपनी जड़ों को पहचानो और पहचानो की तुम्हारा मूल स्थान कहाँ है, जहाँ से ज्ञानार्जन के भाव, जिज्ञासाएँ, मेहनत के लिए प्रेरणा एवम् शरीर को स्वास्थ्य रखने की इच्छाओं का आरंभ होता है। अगर वह स्थान तंदुरूस्त है तो फिर सब कुछ अपने आप ठीक होता जाएगा।

❖❖❖

पछतावा बाद की घटना है

जब काम सही तरीकों से नहीं किये जाते हैं तो उनके परिणाम बुरे आने शुरू हो जाते हैं और पछतावा होता है। यह पछतावा बाद की घटना है यानि एक मानसिक दर्द है जो काम के ठीक ढंग से नहीं हो पाने या कर पाने के कारण उत्पन्न हुआ है। अब इस दर्द से छुटकारा तभी हो सकता है जब तुम पुरानी बातों को भूलकर नये सिरे से अपने काम में लग जाओ, वरन् अगर पुरानी घटनाओं को ही सिर्फ सोचती रहोगी तो फिर नयी चीजें करने के लिए हमारे पास समय ही कहाँ होगा।

केवल एक विषय को

जब शिक्षक केवल एक या दो बच्चों पर ही अधिक ध्यान देता है तो बाकी बच्चों के बीच अविश्वसनीय होकर अपनी साख खो बैठता है। केवल एक विषय को ही अत्यधिक चाहने से दूसरे विषय कमजोर हो जाते हैं। केवल हाथों के व्यायाम से पैर कमजोर रह जाते हैं। केवल पढ़ना ही पसंद करते रहने से लिखते वक्त विवरण कमजोर पड़ जाते हैं। केवल प्रश्न उठाते रहने पर कक्षा में उन्हें स्वयं हल कर लेने की प्रवृत्ति धीमी पड़ जाती है। इस तरह से तुम देखोगी सभी चीजों में सामंजस्य एवं व्यावहारिकता कितनी जरूरी है। हमारा जीवन हमेशा संतुलन चाहता है।

❖❖❖

सही मूल्यांकन

सचमुच तुम्हारे ज्ञान की गहराईयों को नापना बिल्कुल असंभव है। परीक्षा में जो प्रश्न पूछे जाते हैं अगर तुम उनका ठीक तरीके से उत्तर दे देती हो तो अच्छे अंक प्राप्त हो जाते हैं और अगर सारी तैयारी के बावजूद अगर परीक्षा में वैसे प्रश्न पूछे गए जिनकी तुम्हारी तैयारी कम थी तो अंकों का कम आना स्वाभाविक ही हैं। लेकिन सिर्फ परीक्षाफल के अंकों के आधार पर ही किसी के ज्ञान को सीमित मान लेना उचित नहीं होगा। अंक कम आने पर भी हो सकता है उसके पास ज्ञान बहुत सारा हो, यह संयोग मात्र था कि कम तैयारी वाले प्रश्न परीक्षा में आ गए। एक शिक्षक को परीक्षाफल जांचते समय छात्र द्वारा दिये गए उत्तर में उसके लिखने का तरीका, विषय के बारे में उसकी समझ, थोड़े से विवरण लेकिन उनमें छुपी हुई गंभीरता, सोच में सफाई आदि बातों पर अधिक से अधिक ध्यान देना चाहिए ताकि एक छात्र का सही मूल्यांकन हो सके।

❖❖❖

ताजी चीजें

नदी का जल कभी रुकता नहीं, हमेशा अपने किनारों को देखता हुआ आगे बढ़ता जाता है। तुम्हारी आंखें भी इसी तरह एक वाक्य से दूसरे नये वाक्यों की तरह सरकती हुई होनी चाहिए। तुममें एक गति होनी चाहिए की नई–नई चीजों को हमेशा पढ़ती रहो ताकि मन में हमेशा कुछ न कुछ ताजी चीजें भरती जाए। हर दिन।

❖❖❖

परिपक्वता की ओर

शिक्षक तुम पर हर दिन शिक्षा के बीज छिड़क कर एक अच्छी फसल तैयार करने की कोशिश करता है। तुम उनके लिए एक उपजाऊ मिट्टी हो, आधार हो और तुम्हारे द्वारा उन्हें सौंपे गए कार्यों को पूरा करना है। जैसे एक बीज को बोने के बाद जमीन में उसके फूटने एवम् बढ़ने की प्रतिक्रिया चलती है, ठीक वैसी ही तुम्हारे भीतर भी। ये रोज के शैक्षणिक व्याख्यान तुम पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं और अपनी नवीन और पूर्व की समझ से कुछ नये का निर्माण करती जाती हो। हर चीज जो तुम देखती हो, सुनती हो, या किसी भी माध्यम से ग्रहण करती हो। सभी की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप कुछ न कुछ नया तैयार होता रहता है। यही परिपक्वता की ओर बढ़ने का मार्ग है।

❖❖❖

आलस्य की अवस्था

एक आलसी आदमी चुपचाप बैठा व्यर्थ के चिंतन में लगा हुआ समय को बीतते हुए देखता रहता है। उसके पास बल होते हुए भी वह अपने आपको इतना बलहीन महसूस करता है जैसे उसकी देह हाथी हो। जब दिमाग की दौड़ से वह थक जाता है तो सो जाता है और जगा भी रहा तो नजरें केवल टी. वी. पर होती है। किताबों की ओर नजर पड़ती है तो मुँह मोड़ लेता है, जैसे ये नींद में अपना कोई कोना चुभा रही हो। कुल मिलाकर यह वैसी स्थिति है जब एक बड़े पत्थर को मूर्ति बनाने के लिए लाकर रखा तो गया लेकिन कभी तराशा नहीं गया। तुम भी आलस्य की अवस्था में अपने आप को कुछ इसी तरह कर लेती हो। केवल समय का नुकसान और किसी भी तरह के काम का न होना सिर्फ अपने आप को नष्ट होते हुए चुपचाप देखते रहना भर है।

❖❖❖

ज्ञान मजबूत है तो

जब तुममें साहस नहीं है, आत्मविश्वास नहीं है, जो बोलना चाहती हो वह तय नहीं है, जो बोलना चाहती हो उसमें कोई बड़ा आकार नहीं है, सामने वाले से घबराती हो, जिस विषय पर बात करनी है उसका ज्ञान अधूरा है, तो फिर तुम्हारा बातचीत करते समय लड़खड़ाना या बातों को ठीक तरीके से दूसरों तक पहुँचा न पाना स्वाभाविक है। जब टार्च में बैटरी पूरी ताकतवर होती है तो वह प्रकाश को भी तेजी से सामने वाले की ओर ढकेलती है। वैसे ही तुम्हारा ज्ञान मजबूत है तो उसका वेग भी सामने वाले के चेहरे पर स्पष्ट रूप से पड़ता हुआ दिखाई देगा वरन् नहीं।

❖❖❖

इंतजार तो एक परीक्षा है

इंतजार करना सिर्फ समुद्र की ओर देखते रहना नहीं है कि एक दिन जहाज आयेगा और तुम्हें साथ ले जाएगा। बल्कि इंतजार तो एक परीक्षा है कि हर दिन तुम कितनी तैयारी करती हो अपने को विकसित करने की, साथ ही किस तरह से मजबूत बनाती हो, अपने आपको विपरीत परिस्थितियों से लड़ने के लिए। तुम इसी तरह से हमेशा चुस्त और सजग होती हो और जिस दिन भी तुम्हें प्रगति का कोई अवसर मिलता है, तुम अपने आपको उसके लिए उपयुक्त और सही सिद्ध कर पाती हो।

सबसे ऊँची सीढ़ी पर

तुम जब अच्छी तरह से पढ़ती हो लगता है जैसे सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है। शिक्षक भी मौन रहकर तुम्हें पसंद करते हैं, किताबें तथा कापियाँ सभी अच्छी स्थिति में होती हैं। मन प्रसन्न होता है। सारे काम ठीक समय पर संपन्न होने के कारण मन में कोई दबाव नहीं रहता और जब एक दिन परीक्षाफल में काफी अच्छे नंबर से उत्तीर्ण होती हो तो अनजाने में ही सब वाह-वाह बोल उठते हैं, तुम्हारा मन खुशी से झूम उठता है। सभी तुम्हारे प्रशंसक हो जाते हैं और तुम्हारा परीक्षाफल तुम्हें विद्यालय की सबसे ऊँची सीढ़ी पर पुरस्कार लेने के लिए पुकारे जाने लायक बना देता है।

❖❖❖

उपहार

एक प्रेमी अपनी प्रेमिका के लिए सबसे सुन्दर आकार वाला फल चुन कर लाता है, एक बच्चा अपनी माँ के लिए रोटी सेंकने का चिमटा, परिवार का अभिभावक गिनकर सारे सदस्यों के लिए मिठाईयाँ और जो अपने मस्तिष्क से प्रेम करते हैं, लाते हैं खरीदकर सुन्दर–सुन्दर किताबें। जो जिस तरह से और जिससे प्रेम करता है, उसी के अनुसार उपहार भी लाता है। सुन्दर–सुन्दर लिखे वाक्य भी उपहार की तरह ही है जो हमारी भावनाओं को उसी तरह से दूसरों तक पहुँचा देते हैं और हमारा मकसद पूर्ण हो जाता है। लगता है हमारी बात उन तक पहुँच गयी। उपहार एक प्रेम है, मूक प्रेम जो एक हृदय की बात दूसरे के हृदय में बोलता है।

❖❖❖

अलग-अलग तरह का स्वाद

एक वृक्ष की सभी डालियाँ एक तरह से नहीं बढ़ती, सारे हथियार संहारक हैं लेकिन अलग-अलग ढंग से वार करते हैं, एक ही तरह का नमक है लेकिन प्रत्येक व्यंजन में अलग-अलग तरह का स्वाद प्रदान करता है। एक ही प्रश्न है लेकिन उसके उत्तर देने की शैली सबकी अलग-अलग होती है। तुम्हारे लाख चाहने पर भी तुम्हारे घनिष्ठ मित्र भी तुम्हारी तरह तरक्की नहीं कर सकते, उन सबकी अपनी-अपनी दिशा है, अपना-अपना आधार है। इसलिए खास मित्रों की असफलता से बहुत अधिक दुखी होना या उनके दुख में ही अपने को घोल लेना, तुम्हें भी उनके ही मार्ग में ला जाएगा एक दिन। डालियों को सहारा कुछ ही दिनों के लिए देना अच्छा होता है, हमेशा के लिए नहीं।

❖❖❖

गहराई में फैंके हुए पैसे

एक नदी की गहराई में फैंके हुए पैसे भी बच्चे अपनी पूरी शक्ति लगाकर खोज निकालते हैं और उनके चेहरे पर अपार तृप्ति का भाव आ जाता है। तुम्हारी पुस्तकों में भी वाक्यों के अर्थ एक गहराई में छुपे होते हैं, जिन्हें तुम्हें ही ढूंढ़ निकालना है। इन्हें ढूंढ़ निकालने के बाद, तुम भी उन बच्चों की तरह ही तृप्त हो जाती हो।

❖❖❖

तुम्हारी अधिकतम सक्रियता

घर में जब अनाज खरीदकर लाया जाता है तो उसे साफ करने, पीसने, गूंथने, पकाने एवम् परोसने में अनेक लोगों की सक्रियता बढ़ जाती है। लेकिन तुम्हारी पढ़ाई में सिर्फ तुम्हें अकेले सक्रिय होना पड़ता है, इसमें दूसरों की सक्रियता कोई लाभ नहीं पहुचाती, लेकिन अगर सफल लोगों से अगर तुम प्रेरणा लेती हो तो वह तुम्हें और अधिक सक्रिय होने में मदद पहुँचाते हैं। इसलिए तुम्हारी अधिकतम सक्रियता के लिए उच्चतम प्रेरणा की आवश्यकता होती है।

❖❖❖

दूसरों की रुचि में

धार्मिक ग्रंथ समान रुचि वाले लोगों के सामने ही खोले या पढ़े जाते हैं। तस्वीरें खींचते समय छोटे और बड़े कद वाले बच्चों को आगे और पीछे कतार में सजाकर ही लोगों को मन भाने वाली तस्वीर ली जाती है। गुलदस्ते बनाते समय मन को लुभाने वाले आकार में ही फूलों को सजाया जाता है, तभी लोग उसे पसंद करते हैं। तुम्हारी जो भी चीजें हैं जब तक वह दूसरों की रुचि पर खरी नहीं उतरती, तब तक कोई उसे पसंद नहीं करता। इसलिए इस तरह से लिखो या किसी भी चीज का सृजन करो, जो दूसरों की रुचि में भी खरी उतरे।

❖❖❖

प्रेरणादयी वाक्यों का सहारा

जिस तरह से दुश्मन को आते देखकर सिपाही या जिनके पास अस्त्र हैं, वे उन्हें बाहर निकालकर अपने आपको मजबूत कर लेते हैं। लेकिन वे लोग जिनके पास अस्त्र नहीं हैं और अकेले हैं, इन विपत्तियों और दुख की घड़ी में पुस्तकों तथा प्रेरणादायी वाक्यों का सहारा लेते हैं। यह ही उनका अस्त्र होता है। यह ही उन पर हुए अपमानजनक हमलों और सताये जाने वाले दुख को हल्का कर देते हैं और इन विपरीत शक्तियों के विरुद्ध उन्हें खड़ा रखते हैं।

उपलब्ध ज्ञान के सहारे

जब लोहे पर दबाव पड़ता है तो वो फैल जाता है। पानी पर दबाव पड़ता है तो वह इधर–उधर भागने की कोशिश करने लगता है। मिट्टी पर दबाव पड़ता है तो वो सिकुड़ कर अपने आपको बेहद सख्त कर लेती है, काँच पर अधिक दबाव पड़ता है तो वो टूट ही जाता है, जबकि शरीर में दबाव पड़ता है तो हमारी साँसें छूटने लगती है। इस तरह से दबाव पड़ने पर अपनी ताकत और स्वभाव के अनुसार सभी चीजों में कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्य आते हैं। हमारा जीवन भी कम या अधिक दबाव के घेरे के भीतर हमेशा रहता है। तुम्हारा प्राप्त किया हुआ ज्ञान ही इन दबावों को कम से कम तुम पर हावी होने के लिए रोकता है। इसलिए हमेशा उचित होगा कि तुम उपलब्ध ज्ञान के सहारे ही इन सारी मुसीबतों से जूझो और विवेकपूर्ण बनी रहो।

❖❖❖

अखबार की खबरें

अखबार की खबरें सबके लिए होती हैं, इसलिए उसमें कोई लुकाव या छिपाव नहीं होता, लेकिन पत्र या खास बातें जो बिल्कुल निजी होती है उसे सभी को नहीं बताया जा सकता। उनका सुरक्षित और गुप्त रूप से आदान–प्रदान किया जाता है। कहते हैं एक गोली चलने पर कौआ सारे गाँव में शोर मचा कर साथियों को सावधान कर देता है लेकिन रोटी मिलने पर चुपचाप खा जाता है, अपने मुँह पर दाग भी नहीं छोड़ता। एक सैनिक लड़ाई में लगे जख्मों को सभी को दिखाता है लेकिन एक चोर–उचक्का अपने जख्मों को छुपाता फिरता है। इसलिए जिन चीजों को तुम्हारी आलमारी में होना चाहिए उन्हें वहीं पर रहना चाहिए और जो तस्वीरे दीवार के लिए हैं उन्हें वहीं पर टांगा जाना चाहिए।

❖❖❖

उपयोग में संयम

एक हाथी बिना महावत के शहर में विचरण के योग्य नहीं होते हैं। उन्हें अकेला छोड़ देने की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता है। इसलिए जो बलवान हैं वे निर्जन वनों में घूम सकते हैं, लेकिन जब उनसे काम लेने होते हैं तो अंकुश की आवश्यकता होती है। वरन् ये मन से फायदा तो दूर बहुत सारा नुकसान पहुंचा देंगे। उसी तरह ज्ञान की वृद्धि को भी संभालकर रखना एवम् उसके उपयोग में संयम जरूरी है वरन् तुम इसे कुछ अच्छे कामों में लगाने की बजाए अनेक बिना जरुरत के कामों में लगाकर अपनी ऊर्जा ही नष्ट कर बैठोगी। अपने ज्ञान का उपयोग एक निश्चित दिशा में ही पूर्ण समग्रता से करने पर ही अधिकतम लाभ मिलता है।

❖❖❖

कोई बड़ा निर्माण

कोई बड़ा निर्माण तुरंत अकेले नहीं हो जाता, इसमें अनेक वर्ष लगते हैं तथा अननिगत लोगों का योगदान भी होता है। कितबों जो तुम पढ़ती हो कक्षा में, वो किसी एक आदमी का विचार या निजी बातें नहीं होती बल्कि वर्षो से क्रम दर क्रम संसार में जो परिवर्तन हुए हैं एवम् जिन लाभकारी चीजों का भविष्य में निर्माण करना था, संचालन करना है उन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु ही कक्षा में पढ़ाये जाने योग्य पुस्तकें लिखी जाती है। किसी कक्षा में पढ़ाये जाने योग्य पुस्तकों को लिखते वक्त अनगिनत जानकारियों को एक साथ समेटा जाता है ताकि बहुत सारी जानकारियाँ तुम्हें मिल जाए और तुम आधुनिक युग में अपने पाँव तो जमाये ही रख सको, साथ-साथ उन्हें अच्छी तरह समझ कर अपने भविष्य को और अधिक उन्नत कर सको।

❖❖❖

संसार की बुरी चीजें

गंदा पानी अगर गंदे पानी से मिलता है तो तुरंत ही और अधिक गंदा हो जाता है, जबकि साफ पानी गंदे पानी से मिलने पर साफ नहीं रह जाता वह गंदा हो जाता है। इसलिए संसार की बुरी चीजें दूसरी बुरी चीजों से तुरंत घुल जाती है और एक नई बुराई की जन्म दे देती है, जबकि अच्छी चीजें बुराई से दूर रहना चाहती है ताकि अपने को साफ–सुथरा रख सके। तुम्हारी कक्षा में पढ़ाई में कम ध्यान देने वाले एवं घूमने फिरने वाले बच्चों को भी उसी तरह के समान रुचि वाले अनेक बच्चे मिल जाते हैं क्योंकि इनकी संख्या थोड़ी अधिक होती है। लेकिन पढ़ाई में अव्वल आने वाले बच्चों के दोस्तों की सख्या कम होती है क्योंकि पढ़ाई छोड़कर दूसरे तरह के काम करने के लिए उनके पास समय बहुत कम होता है।

❖❖❖

अंधेरा छंटने लगता है

जैसे ही रात के अंधकार को सुबह का प्रकाश मिलता है उसका अँधेरा छँटने लगता है। हमारी अज्ञानता में भी प्रकाश की किरणें पहुँचते ही वह ज्ञान में बदलने लगता है। लेकिन हमारी अज्ञानता की श्रृंखला इतनी लम्बी और गहराई तक है कि उसे हर दिन धीरे–धीरे, टुकड़ों–टुकड़ों में ही प्रकाशित किया जा सकता है। इसलिए जितना भी ज्ञान तुम हासिल कर लो, अज्ञानता का अंश हमेशा ही तुम्हारे में बचा ही रहेगा। साथ ही इस अज्ञानता को दूर करने की भूख भी बनी रहेगी और साथ–साथ यह समय भी यूँ ही गुजरता जाएगा।

❖❖❖

एक सुंदर बगीचे में

एक सुंदर बगीचे में तुम जितनी बार जाती हो, हर बार तुम्हें एक नयी अनुभूति होती होगी। हर बार नये–नये फूल नये–नये पक्षी, नये–नये फल, नयी तरह की हरियाली आदि देखने को मिलती है जो मन को ताजा कर देती है। इसलिए वहाँ बार–बार जाने को मन करता है। ऐसी ही खुशी विद्वानों के संसर्ग से भी मिलती है। हर बार कुछ नया सीखने को मिलता है। उनके सृजनात्मक अनुभव हमारी सृजन प्रक्रिया में प्राण फूँक देते हैं।

❖❖❖

पैनी आँखें

कहते हैं ऊदबिलाव जैसा जंतु नदी के पानी में छोड़ा जाता है जो मछलियों को दौड़ा–दौड़ाकर जाल की तरफ ले जाता है और वे वहाँ जाकर फँस जाती हैं। एक पैनी आँखें भी इसी तरह की होती हैं वे अनेक काम की चीजें चुन–चुन कर तुम तक पहुँचाती है, अब यह तुम पर निर्भर होता है कि तुम उनका उपयोग करो या नहीं।

❖❖❖

अलग-अलग असर

एक पेड़ से उसके सारे पत्ते तोड़ लिये जाएँ तो वह कमजोर होकर मर जाता है जबकि दूसरे पेड़ के सारे पत्ते तोड़ दिये जाने पर भी वह अपने सामर्थ्य से पहले से अधिक पत्ते उगा लेता है। एक बात तुम्हें किसी के द्वारा कही गयी, तुम्हें अपमानित एवम् क्रोधित कर देती है, जबकि दूसरे व्यक्ति को इससे कोई फर्क ही नहीं पड़ता है। एक बच्चा कक्षा में फेल होता है और पढ़ना ही छोड़ देता है, जबकि दूसरा बच्चा फिर उसी कक्षा में पढ़कर अपनी मेहनत से प्रथम आता है। कहते हैं कितना दुरुपयोग होता है एक दियासलाई का सिगरेट को जलाने में जबकि कितना अधिक सदुपयोग एक चूल्हा जलाने में। ये एक जैसी कितनी ही चीजें हैं जो व्यवहार में आने पर अपना अलग-अलग असर छोड़ती है। इनमें व्यवहार की विभिन्नताएँ समझने की चीज है।

❖❖❖

अर्थवान ज्ञान

जीवन की प्राण शक्ति, कमजोर और पस्त देह से अपना स्थान छोड़ देती है। पकने के बाद चावल और गेहूँ जैसे अन्न संचय के योग्य नहीं रह जाते और जो संचय के योग्य नहीं होता उसे जल्द से जल्द नष्ट करने की हमारी प्रवृत्ति होती है। इसलिए तुम्हें जहाँ–जहाँ मोती जैसा टिकाऊ अर्थवान ज्ञान मिलता है केवल उसे ही संचित करो। साधारण ज्ञान की कोई लम्बी उम्र नहीं होती न ही उसका कोई महत्व होता है।

❖❖❖

प्रकाश पहुँचाने के लिए

सारी मूल्यवान चीजों को अपना अर्थ या गुण दर्शाने के लिए प्रकाश चाहिए। तुम्हारे भीतर जो कुछ भी मूल्यवान है वह अंधकार में है, उस पर प्रकाश पहुँचाने के लिए रास्ते चाहिए। ये रास्ते तुम पुस्तकों से प्राप्त करती हो। फिर तुम उन्हें जाँचती हो और अपने अद्‌भुत एवं बहुमूल्य खजाने के भीतर दाखिल होती हो।

❖❖❖

हमारी खोज

एक गुम हुई चीज के वापस मिल जाने पर मन में बेहद खुशी होती है, लगता है उसे खोजने में किया गया प्रयास सफल रहा। वैसे ही जब हम एक नई चीज को खोजते हुए पा लेते हैं तो उतना ही सुख मिलता है। ऐसा लगता है हर समय हमारी खोज जारी है। हम हमेशा पुरानी और नई चीजें दोनों एक साथ खोज रहे हैं।

अनेक तरह के संबंधों से

एक नारी अपने पति का सहारा पाकर, लालटेन की लौ परदर्शी काँच का सहारा पाकर, जंगली कुत्ते रात का सहारा पाकर, बदमाश लोग बदमाश का सहारा पाकर, राजनीतिज्ञ आम जनता का सहारा पाकर तथा सैनिक देशभक्ति के गीत सुनकर मजबूत हो जाते हैं। इस तरह से अनेक तरह के संबंधों से चलती है यह दुनिया। इस तरह–तरह के संबंधों को जानते एवं समझते हुए चलते रहना है हमेशा।

❖❖❖

जिम्मेवार लोग

एक अच्छा चरवाहा पशुओं को हरी–भरी जगह में ही चराने ले जाता है न कि सिर्फ अपने आराम के लिए नजदीक की किसी सूखी हुई जगह में। जिम्मेवार लोग वहीं होते हैं जो अपने को कठिनाईयों में रखकर भी दूसरों के सुख को देखते हैं और दूसरों की खुशी में अपने आप को भी शामिल कर लेते हैं। ऐसे जिम्मेवार लोगों के कारण बहुत सारे लोगों को प्रकाश तो मिलता है लेकिन वे अपना प्रकाश खोते भी नहीं, साथ–साथ इसमें वृद्धि भी करते जाते हैं।

❖❖❖

दिमाग में पीछे की ओर

युद्ध खत्म होने के बाद सारे अस्त्रों को फिर से छिपा दिया जाता है वैसे ही परीक्षा के समय तुम जिन अंगों को जाग्रत कर रखा था, उनके विश्राम की भी आवश्यकता होती है। दिन बीतने के साथ–साथ पुराना ज्ञान धीरे–धीरे दिमाग में पीछे की ओर खिसकता जाता है और नये–नये ज्ञान और नयी चीजों की जानकारियाँ आगे आती जाती है।

❖❖❖

उपयुक्त समय आने पर

धीरे–धीरे कई दिनों में पहाड़ों में बर्फ जमती है और गर्मियाँ आने पर एक वेग के साथ बहकर दूर–दूर तक निकल पड़ती है। इसी तरह से तुम्हारा ज्ञान भी धीरे–धीरे जमता है तुम्हारे दिमाग में और उपयुक्त समय आने पर अपने कार्यों के सम्पादन के लिए बाहर निकल पड़ता है। इसलिए इस ज्ञान का जितना अधिक संचय होगा, उतनी ही तुम्हारी कार्यक्षमता बढ़ती जाएगी।

❖❖❖

तुम उतना ही पढ़ो

कई लोग तीनों समय का भोजन करके भी न ही उसे पचा पाते हैं और न ही उससे तृप्त होते हैं जबकि अनेक लोग सिर्फ एक बार का भोजन करके ही संतुष्ट हो जाया करते हैं। इसलिए तुम उतना ही पढ़ो या अध्ययन करो जो तुममें बचे और मन को शांति भी दे।

❖❖❖

अभ्यास के कारण

अभ्यास के कारण ही एक योगी का शरीर मनचाही दिशा में मुड़ जाता है और अभ्यास से ही एक तैराक पानी में गोते लगाता है जैसे वह सागर की ही संतान हो। वे शिक्षक श्रेष्ठ हैं जो बच्चों को अच्छे ढंग से पढ़ाते तो हैं ही साथ–साथ उनके द्वारा किये जा रहे पढ़ाई के अभ्यास और विधियों पर भी नजर रखते हैं तथा इस कार्य में अपने निजी ढंग से भी मदद करते हैं।

❖❖❖

कई दिनों का अभ्यास

एक सबसे तेज दौड़ने वाले घोड़े को भी अगर कुछ दिनों तक दौड़ाया न जाए और वो आराम करता रहे तो फिर दुबारा उसे दौड़ाने पर पहले वाली गति प्राप्त करने के लिए कई दिनों का अभ्यास जरूरी हो जाता है। जब तक तुम्हारी कलम चलती रहती है, पढ़ा हुआ सारा विवरण तेजी से कागज पर उतर जाता है, जैसे ही उसे विश्राम दिया गया, शब्द अपनी कतार भूलने लगते हैं। फिर जो लिखा जाता है न तो उसमें कोई लय होती है और न ही कोई क्रम।

सृजन समाप्त हो जाता है

एक नये आदमी को फटे–पुराने कपड़े सीने का काम सबसे पहले दिया जाता है ताकि वह उन पर अपना हाथ साफ कर ले और फिर नयी चीजों पर हाथ लगाये तो वे नष्ट न हो। कक्षा के आरंभ के दिनों में वाक्यों के बीच खाली जगह छोड़ दी जाती थी और तुम्हें उसे भरने को कहा जाता था। तुम्हारे सही शब्दों के भरते ही वह वाक्य पूरा हो जाता या और अपना अर्थ खोल देता था। इस तरह के अभ्यास से धीरे–धीरे वाक्यों की संरचना तथा उपयुक्त शब्दों का उपयोग कर विषयों में अनुकूल भावनात्मक संरचना तुम पैदा कर पाती हो। तुम्हारा प्रत्येक सृजन अधूरे को पूरा करना ही होता है और चीजें पूरी होने पर उनके प्रति तुम्हारा सृजन समाप्त हो जाता है।

❖❖❖

छोटे और सरल काम

एक दीवार पर टंगी हुई घड़ी से अनगिनत लोग अपना काम चला लेते हैं। कोई मधुर संगीत बज रहा होता है और एक साथ अनेक यात्री इसका आनंद लेते रहते हैं। कहीं कोई अच्छी बात लिखी हो दीवारों पर तो राह चलते अनगिनत लोग उसे पढ़ते हुए जाते हैं। ये उस तरह के सरल काम हैं जिनमें अधिक परिश्रम तो नहीं होता लेकिन फायदा एक साथ बहुत सारे लोगों को होता है। इस तरह के अनगिनत छोटे और सरल काम हुए दुनिया में मौजूद हैं जिन्हें तुम संपन्न कर अनेक लोगों को फायदा पहुँचा सकती हो।

❖❖❖

विशेष संदेश छुपा होता है

कुछ चित्र ऐसे होते हैं जिन्हें हर जगह में दर्शाया जाता है, चाहे अखबार हो, पत्रिकाएँ या बड़े–बड़े होर्डिंग। क्योंकि इनमें एक विशेष संदेश छुपा होता है और वे प्रत्येक आदमी को कोई न कोई सामाजिक भावना से प्रेरित करते हैं। जैसे एक महिला द्वारा डॉक्टर से अपने बच्चे की जाँच करवाये जाने का चित्र, जो बच्चों की सामयिक जाँच एवम् उनको टीका दिलाने के लिए हमारा ध्यानाकर्षण कराते हैं। तुम्हें भी चित्र बनाते समय इन बातों का ध्यान रखना चाहिए कि उनसे कोई न कोई संदेश दूसरों को मिलता हो यानि वह चीज लोगों की भावना से गहरे में जुड़ जाए और लोग महसूस करें की यह चित्र उनकी जिन्दगी का ही कोई हिस्सा है।

❖❖❖

बुद्धि जरुर जागेगी

एक सफेद चेहरे पर चाहे कितना ही काला रंग क्यों न चढ़ाते जाओ, एक दिन काला रंग भी उस पर चढ़ना बंद हो जाएगा। एक आदमी कितनी ही बुराईयों में लिप्त होता जाए, एक दिन ऐसा समय जरुर आयेगा जब वह उनसे छुटकारा चाहेगा और अच्छी चीजों से जुड़ेगा। एक न पढ़ने वाले बच्चों को भी अगर बार–बार गलत उत्तर देने पर भी प्रोत्साहित किया जाएगा और निरन्तर लिखते रहने को कहा जाएगा तो एक दिन उसकी बुद्धि जरुर जागेगी और उसमें सुधार आरंभ हो जाएगा।

❖❖❖

जितने भी सूक्ष्म कार्य हैं

जितने भी सूक्ष्म कार्य हैं उन्हें अत्यधिक प्रेम और धैर्य से करना पड़ता है। इनमें जरा सा भी प्रेम या लगाव का अभाव रहा तो इन कार्यों की कलात्मकता में कमी आ जाएगी। जैसे कालीन बुनने वाले कितनी सफाई और मेहनत से क्रम दर क्रम एक अच्छे कालीन का निर्माण करते हैं, तब जाकर इनके ऊँचे दाम मिलते हैं। इसी तरह से स्वर्णकारी, कढ़ाई और यहाँ तक की झोपड़ी के बाहर बनाया गया अलता भी। ये चीजें जितनी अच्छी और सुंदर होती है उनमें उतना अच्छा कलात्मक जीवन जीता-जागता दिखाई देता है। प्रेम की बजाए गुस्से में न ही किसी कलाकृति का निर्माण हो सकता है और न ही उसकी परख। यहाँ तक की गुस्से के समय सुई में धागा डालना भी कठिन लगता है। इसलिए जितना तुम नम्र और प्रेमपूर्ण रहोगी चीजों में छिपी बारीकी को अच्छी तरह से समझ पाओगी।

❖❖❖

बहुत सारी कलाओं का

जब तुम अपने आप को कमजोर महसूस करती हो, उस वक्त अनेक लोगों का साथ चाहती हो कि वे तुम्हारे पक्ष में रहे और जब तुम खुद ही मजबूत रहती हो तो लोग तुम्हारे पक्ष में अपने आप आना चाहते हैं। यह निश्चित है कि जब लोहे के खंभे मौजूद होंगे वे ही घर की छत का भार उठायेंगे और लकड़ियाँ केवल साज–सज्जा के काम में आयेगी। इसलिए मजबूत लोगों की सबसे पहले पूछ है, बाकी कमजोर लोग तो खुद ब खुद उसकी शरण में आ जाएँगे। अगर तुम पढ़ाई में इनमें से कोई एक भी बात जैसे अच्छी तरह लिखना, अच्छी तरह बोलना या अच्छी तरह समझना, को साध लेती हो तो फिर बाकी चीजें अपने आप सध जाएँगी। इसलिए सिर्फ एक कला या विद्या को विकसित करने पर भी बहुत सारी कलाओं का साथ–साथ अपने आप विकास होता जाता है।

❖❖❖

नाम भर पुकार लेने से

एक गाय, एक कुत्ता या कोई पालतू जानवर केवल नाम भर पुकार लेने से ही सशरीर उपस्थित हो जाता है। किसी के घर का नाम लिया जाता है और उसका पूरा नक्शा ही हमारे सामने होता है। वैसे ही जो पाठ हमारे मन में प्रिय या पालतू हो जाते हैं, उनका कोई एक नाम अनजाने में मन में गठित हो जाता है और उसे स्मरण करते ही सारा पाठ चित्र की भाँति हमें दिखाई देने लगता है। जितना अधिक तुम अपने प्रिय दोस्तों की तरह चीजों या पाठ से प्रेम करोगी वे उतने ही तुम्हारे नजदीक आने लगेंगे।

❖❖❖

घड़ी और हृदय में समानता है

घड़ी और हृदय में समानता है कि वे हमेशा धड़कते रहते हैं लेकिन बंद किताबें खोलने पर ही जाग पड़ती है जैसे बीज जो सही जमीन मिलने पर ही अपने प्राण खोल देते हैं।

❖❖❖